मेरा पहला संकाय विकासात्मक प्रशिक्षण

लगभग 35 साल पहले जब से मैं आईएमएक्स में शामिल हुआ, तभी से मैं परेशान था मेरे निदेशकों और बोर्ड के सदस्यों के साथ वह संस्थान कुछ नहीं कर रहा है मेरा विकास. दरअसल, एक बार बोर्ड के एक सदस्य ने पूछा, “नरेंद्र, आप यहां दस वर्षों से अधिक समय से पूर्ण प्रोफेसर रहे हैं; अब कैसा विकास तुम्हें चाहिए?"। मैंने नम्रता से कहा, “सर, क्या मुझे इस बौद्धिक स्तर पर सेवानिवृत्ति तक बने रहना चाहिए?”

मेरे शेष जीवन के लिए प्रशासनिक अनुभव का स्तर और सड़ गया?"। तथापि कुछ नहीं हुआ और मैंने अपने पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया संस्थान से मेरी सेवानिवृत्ति के 5 वर्ष बाद।

संस्थान अपना पहला संकाय विकास कार्यक्रम शुरू कर रहा था राष्ट्रीय प्रबंधन संकाय विकास केंद्र (एनएमएफडीसी) के तहत, आइवी स्कूल के सहयोग से। संयोगवश इस उद्देश्य के लिए IMX के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की उप-समिति जिसने इसकी मंज़ूरी दी थी, उसमे मैं भी एक सदस्य था । समिति के सदस्य के रूप में कार्यक्रम, से मैं पीछे नहीं हट सका। अपने कार्यक्रम को सफल बनाने की जिम्मेदारी निदेशक के ऊपर थी ।

मुझे कार्यक्रम के दौरान परिसर में रहने के लिए कहा गया क्योंकि इस अवधि के दौरान एनएमएफडीसी केंद्र औपचारिक रूप से लॉन्च होने की संभावना थी । मुझे यह करना पड़ा । मेरी पत्नी को भी साथ ले जाना था क्योंकि बुढ़ापे से जुड़ी समस्याओं के कारण हम साथ जाते थे ।मेरी यात्रा और आतिथ्य का खर्च कौन वहन करेगा, इसके बारे कोई स्पष्टता नहीं थी। मेरे लिए इतनी छोटी सी बात पर स्पष्टीकरण माँगना शर्मनाक था ।

जब से मैंने आईएमएक्स में पहले डीन (एए) के रूप में पदभार संभाला, मैंने शायद ही कभी ऐसा किया हो जब से मैंने आईएमएक्स में पहले डीन (एए) के रूप में पदभार संभाला है, मैंने शायद ही कभी ऐसा किया हो मेरे किसी भी संकाय सहकर्मी के मदद के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया।

एक युवा सहकर्मी (जिनकी भर्ती में नब्बे के दशक मैं भी डीन के रूप में देर से शामिल था), जो कार्यक्रम निदेशक थे, ने मुझसे इस आयोजन के लिए कुछ नामांकन भेजने के लिए कहा । मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कैसे प्रतिक्रिया दूँ। मैंने स्वयं के लिए ऑनलाइन पंजीकरण फॉर्म, आवश्यक पंजीकरण शुल्क के साथ जमा कर दिया इस तरह पहला और सबसे बुजुर्ग (71 वर्ष) प्रतिभागी बना।

इस सब पर खर्च मेरी एक महीने की पेंशन लगभग 40% था, लेकिन किस को इसका भान तक नहीं था कि इसे व्यक्तिगत रूप से मेरी पेंशन से सहन करना होगा ।

मैं कार्यक्रम की पूर्वसंध्या पर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचा. से मुझे कॉल आया और कार्यक्रम निदेशक ने कहा कि अगले दिन सुबह मुझे कार्यक्रम का उद्घाटन करना है । मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई प्रतिभागी इसका उद्घाटन कैसे कर सकता है । सहकर्मी ने निदेशक से बात की और एक समाधान निकला । पता चला: मुझे अतिथि के रूप में 9.30 बजे कार्यक्रम का उद्घाटन करना चाहिए और प्रातः 10.00 बजे कार्यक्रम प्रारंभ होने पर प्रतिभागी बनू ।

निर्देशानुसार मैंने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। चूंकि उस दिन शिक्षक दिवस था, मैंने आइवी स्कूल के माननीय विशेषज्ञ जो कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। एक स्मृति चिन्ह (उपहार पैकेज में लपेटा हुआ) दिया। जब उन्होंने उसे खोलने की कोशिश की तो मैंने उससे अनुरोध किया कि जब वह वापस अपने कमरे में पहुंचे लौटे तभी उसे देखें । चाय के विश्राम के दौरान मैंने विशेषज्ञ से मुझे क्लास में भाग लेने का अनुरोध न करें क्योंकि यह मेरी विशाल (?) शैक्षणिक स्थिति के कारण सीखने में बाधा उत्पन्न कर सकता है, जिस पर वह सहमत हुए।

समापन सत्र समाप्त होने के बाद अंतिम दिन आइवे के विशेषज्ञ संकाय से आए ने मुझसे पूछा "आपने यह पुस्तक प्रतिभागियों को क्यों नहीं दी?" मैं मुस्कुराया। यह केस मेथड पर एक किताब थी, जिसमें विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया था: केस पद्धति से पढ़ाना, केस लिखना, शिक्षण नोट तैयार करना आदि। इसमें छात्रों के केस राइटिंग के दो दिलचस्प प्रयोग भी हैं। इसमें इस बात पर भी कई कहानियाँ थीं कि कैसे केस लेखन संकाय विकास में मदद करता है। यह केस एनालिसिस किताब (प्रशिक्षकों की मार्गदर्शिका) का एक संशोधित संस्करण था, मैंने स्ट्रैटेजिक पर अपनी केस बुक के लिए लिखी थी (जो किसी भारतीय प्रबंधन संकाय सदस्य की ओर से पहली) 20 साल से भी पहले. प्रकाशित किताब थी